डेविड ऑसबरॉ एक शिक्षाचिंतक, प्रयोगशील शिक्षक और सजग लेखक तो थे ही, साथ ही एक संवेदनशील कवि भी थे । व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में शिक्षा एक समर्थ उपक्रम बन सके, इसके लिए डेविड विविध कला अनुशासनों को शैक्षिक-प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाने के लिए अनथक प्रयास करते रहे । एक दार्शनिक जैसी जिज्ञासा और सौंदर्य शास्त्री की मर्मज्ञता इन कविताओं में भी प्रतिबिम्बित होती हैं जो डेविड के समूचे जीवन - कर्म और कृतित्त्व की विशेषता है । पहली कविता बच्चों के लिए लिखी छंदबद्ध कविता का रूपान्तरण है जबकि दूसरी कविता डेविड ने मौजूदा शिल्प में ही लिखी थी । हमने इन्हें उनकी दर्जन भर कविताओं में से चुना है । रूपान्तरकार हैं प्रो. मोहन श्रोत्रिय ।

पतंग

मेरे पास थी एक पतंग
चटख लाल रंग की पतंग
उड़ती थी चिड़िया की तरह
आसमान में
पक्की डोर के बूते पर
तेज हवा के बावजूद
ऊपर उठती ही जाती थी पतंग ।

पक्की थी डोर
और हवा बहुत तेज थी
पर दूर उड़ती ही चली गई पतंग ।
विदा लाल पतंग !
अलविदा, प्यारी पतंग !
लौटकर आना जरूर एक दिन
मेरी प्यारी-सी लाल पतंग !

एक महीना ही बीता था,
बैठा था मैं एक दिन
बैठे-बैठे ही सपने में देखी

मैंने वैसी ही प्यारी सी पतंग
और तभी जैसे नीले कच्च
आसमान से टपक पड़ी
मेरे पैरों के पास
वह पतंग मेरी पतंग ।

खुशी से चिल्ला उठा
तुम लौट ही आई आखिर
ओ मेरी मित्र
अब मेरे साथ ही रहना
बरसों-बरस
अब फिर उड़ कर
मत चली जाना ओ मेरी पतंग !
मेरी प्यारी-सी लाल पतंग ! ◆

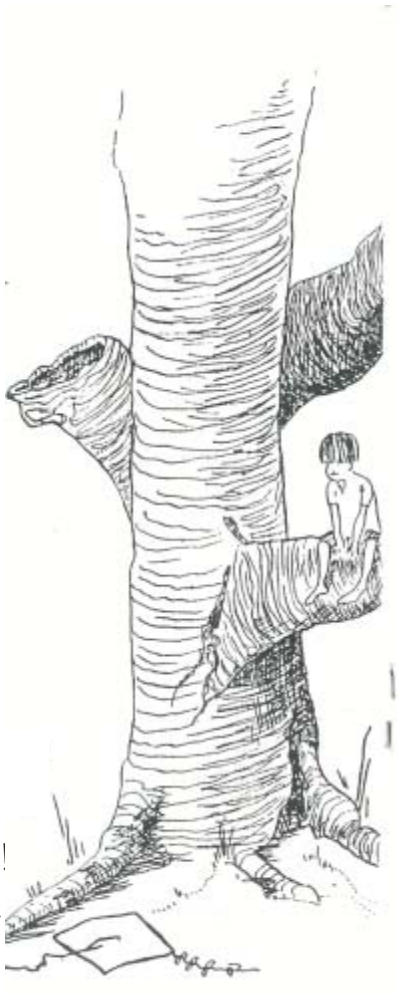

चित्रांकन : डेविड ऑसबरॉ

विरासत पेड़ों की

आज मैनें देखा
पेड़ पर हमला बोलता एक आदमी
आहत करता उसे ।

बीस मील तक चलते चले जाओ
मैसूर-ऊटी मार्ग पर
देखोगे वहां
दुखी-द्रवित कर देने वाला नजारा
सचमुच की दुखांतिका ।

दिखेगी कतार पेड़ों की
उदारमना पेड़ों की
क्षत-विक्षत
असमय ही उनके तनों से विच्छिन्न कर दी गई शाखें
उघड़े पड़े हों जैसे घाव
उनके तने भी तो जख्मी हैं
चीर फाड़ के शिकार
झेलते यंत्रणा चिरने की ।

कुछ हैं जीवित
विनत से, विकलांग ।
और कुछ तो
हो गए हैं दिवंगत ।

उनका बहिरंग काला पड़ गया है
सूरज की गर्मी से,य ताप से
उनके खुरंट
और पपड़ाए घावों के निशान
ला-मरम्मत हैं पूरी तरह से ।

ये पेड़
ये चित्ताकर्षक उदारमना पेड़
रोपे होंगे कभी
बहुत बहुत पहले
अपने कोमल-मृदु हाथों से
किसी इस्माइल ने
किसी विश्वेश्वरैया ने
या किसी गुमनाम महामना ने

यह भी तो संभव है
रोपे गये हों ये शाही संरक्षण में ।

कैसा हो यदि वे आ जाएं
शांत शीतल विश्राम स्थलों से निकलकर
डालने को फिर से एक नजर
अपनी कृतियों पर
अपने जीवन भर के काम पर
लोगों की बहबूदी के लिए
रोपे गए पेड़ों पर ?

अब सब करें इनका भोग
बोटी-बोटी कर दें अलग
टुकड़ों में काट दें इन्हें
ताकि गांव भर का भोजन
पकाने वाली आग
ज्यादा गरम ज्यादा तेज
बनी रह सके

पेड़ हमारी विरासत हैं
और कितनी पवित्र है
इनकी राख ! ◆

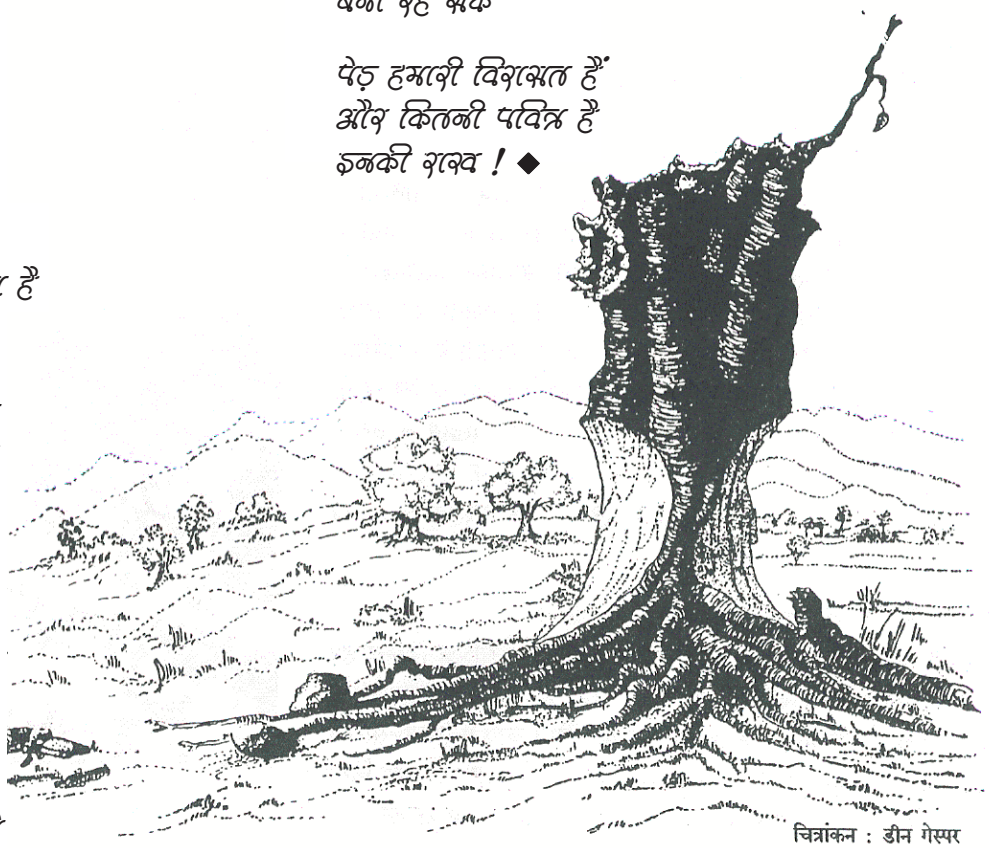

चित्रांकन : डीन गेस्पर